

पाठक-पीठिका

आपके पत्र प्यारे-प्यारे : आपकी भावनाओं के हरकारे

प्रिय पाठको,

‘रेल दर्पण’ पत्रिका के बारे में आपके पारखी विचारों को हम तक पहुँचाने वाली आपकी प्यारी-प्यारी चिट्ठियाँ हमारे प्रयासों के प्रतिफल का आईना भी हैं और इन्हीं से हमें आगे बढ़ते रहने की ताकत भी मिलती है।

दिसम्बर, 2012 में प्रकाशित अंक की तारीफ और समालोचना करने वाली ढेर सारी चिट्ठियाँ हमें मिली हैं। इन्हीं में से कुछ चुनिंदा खतों तथा समाचार पत्रों में प्रकाशित समीक्षाओं का प्रकाशन हम इस ‘पाठक-पीठिका’ स्तम्भ के अंतर्गत कर रहे हैं। इस बार की खास बात यह है कि प्रातःकाल, नवभारत, नवाकाळ, बहुजनरत्न लोकनायक,

गुजरात वैभव, हमारा महानगर यशोभूमि और जागरूक टाइम्स जैसे प्रतिष्ठित हिंदी एवं मराठी भाषाओं के समाचार पत्रों में प्रकाशित समीक्षाओं में ‘रेल दर्पण’ के इस अंक की खुलकर तारीफ की गयी है, वहीं कुछ वरिष्ठ अधिकारियों, सम्पादकों एवं पत्रकारों ने स्वयं पत्र प्रेषित कर ‘रेल दर्पण’ पत्रिका को काफी सराहा है।

‘रेल दर्पण’ का सम्पादकीय परिवार आप सभी के प्रति अपनी विनम्र कृतज्ञता ज्ञापित करता है। आपकी भावनाओं के हरकारे आपके पत्रों का सिलसिला ऐसे ही जारी रहे, यही हमारी मंगल कामना है।

 प्रधान सम्पादक

आपसे मिले पत्र

प्रातःकाल,

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

‘रेल दर्पण’ - किये गये अच्छे कामों की शानदार झलक

पश्चिम रेलवे के जनसम्पर्क विभाग ने अपनी गृह-पत्रिका रेल दर्पण का नया अंक प्रकाशित किया है, जिसका प्रकाशन वह पिछले 13 वर्षों से निरंतर कर रही है। ‘रेल दर्पण’ के इस अर्द्ध वार्षिकांक में लगभग 75 पृष्ठों में पश्चिम रेलवे के इतिहास से चलकर वर्तमान तक की यात्रा समाहित है।

यात्रियों की सुविधा को देखते हुए 19 सितम्बर, 2012 के दिन अहमदाबाद-मुंबई सेंट्रल डबल डेकर एसी सुपरफास्ट ट्रेन के अस्तित्व में आने का पूर्ण विवरण ‘रेल दर्पण’ में देखा जा सकता है। अन्य महत्वपूर्ण रेल सेवाएँ जो अस्तित्व में आयीं, उनमें आणंद-दाहोद के लिए नई मेमू ट्रेन तथा उधना से वाराणसी के लिए साप्ताहिक एक्सप्रेस शामिल हैं। पश्चिम रेलवे नई रेल सेवाओं के साथ रेलकर्मियों तथा उनके परिवारों को बेहतर अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध करवाती है। इसके मद्देनजर मुंबई सेंट्रल स्थित पश्चिम रेलवे के जगजीवन राम अस्पताल में नवनिर्मित अत्याधुनिक कार्डियोवस्कुलर व थोरासिक विभाग खोला गया। यह विभाग न केवल पूरे भारतीय रेलवे में अपितु पूरे देश में अपने प्रकार का पहला विभाग है। इस विभाग में हृदय, मस्तिष्क तथा विभिन्न अवयवों

के सभी रोगों का प्रभावी इलाज हो सकेगा। अपनी अन्य उपलब्धियों के क्रम में पश्चिम रेलवे के दाहोद कारखाने में पहली बार असेम्बलड डब्ल्यूएजी 7 लोकोमोटिव का निर्माण भी एक उल्लेखनीय घटना है। पश्चिम रेलवे में वर्ष 2011-12 के दौरान अपने उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए रेल मंत्रालय द्वारा दी जानेवाली समग्र कार्य कुशलता शील्ड और संरक्षा शील्ड सहित कुल चार रनिंग शील्ड हासिल करके उल्लेखनीय उपलब्धि अर्जित की है।

‘रेल दर्पण’ में पश्चिम रेलवे की रेलवे सेवाओं की नवीनतम गतिविधियों के अतिरिक्त कविताओं, कहानियों, सामयिक लेखों तथा व्यंग्य लेखों से पत्रिका में चार चांद लगाये गये हैं। हिंदी दिवस पर डॉ. ताराचंद शर्मा का आलेख ‘हिंदी दिवस कितना सार्थक?’ उल्लेखनीय है। इस व्यंग्य रचना में अंग्रेजी भाषा से हिंदी में किये जाने वाले अनुवाद की विसंगतियों को दर्शाने में वह सफल हुए हैं। अंग्रेजी के शब्दों का हिंदी में जबरन अनुवाद करने से जो हास्यमय स्थिति भाषा की होती है, यह अपने आप में दुःखद है। ‘व्यंग्य वीथिका’ के अंतर्गत चर्चित कवि एवं लेखक श्री आश करण अटल की रचना ‘नायिका भेद’ पहले से ही इस पत्रिका में चर्चित हो गई है। सिने अभिनेत्रियों पर उनका यह व्यंग्य एक अच्छी रचना है। गौरतलब है कि हिंदी सिनेमा के 100 वर्ष पूरे होने के बाद भी फिल्मों की नायिकाएँ मात्र शो-पीस क्यों बनी हुई हैं? उनका रचनात्मक इस्तेमाल कमर्शियल सिनेमा कब करेगा? हालांकि हाल में नायिका प्रधान फिल्मों का चलन बढ़ा है। वर्तमान स्थिति बहुत

संतोषजनक नहीं है, तो चिंताजनक भी नहीं है। नये निर्देशकों की पीढ़ी पर भरोसा किया जा सकता है, जो आने वाले समय में नायिकाओं को उनका वाजिब हक दिलाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे।

लेखक श्री सीताराम की रचना ‘चलती चक्की देखकर दिया कबीरा रोय’ एक सशक्त रचना है। कबीर के उदात्त मानवीय मूल्यों को यह रचना बखूबी पेश करती है कि एक संत कवि का दर्जा किसी राजा के रहमो-करम का मोहताज नहीं होता। कबीर का सम्राट सिकंदर को पढ़ाया गया सबक इतिहास में हमेशा के लिए दर्ज हो गया है, जिसे आनेवाली पीढ़ियाँ नसीहत के रूप में लेंगी। कहानी खंड में श्री विनय कुमार पटेल की ‘मजबूरन’ में चाय बागान में औरतों के जीवन-यापन का संघर्ष और उनके बच्चों पर उसके पड़ने वाले प्रभाव को पूरी ईमानदारी से पेश किया गया है। विकास के सारे दावों की पोल खोलती इस कथा से यही मालूम होता है कि हमारी राजनीति कितनी संवेदन शून्य हो गयी है। श्री रघुराजसिंह कर्मयोगी की रचना ‘बांध कैसे बांधोगे?’ में विकास के नाम पर हमारी नदियों का दोहन और उससे प्रभावित जनता का दर्द बयान हुआ है। हमारे देश का दुर्भाग्य है कि विकास की योजनाओं में सबसे पहले दलित और दमित तबका ही पीसा जाता है। लेकिन गाँव वालों में अभी मानवीयता बची हुई है, जो डूबते हुए इंजीनियर को बचा लेते हैं। कविताओं में श्री रवींद्र कुमार टंडन की कविता ‘मेरी कविता ऐसी...’ की चर्चा जरूरी है। यह कविता पढ़ते

अखबारों में प्रकाशित समीक्षाएँ

हुए मुझे जापानी कवि श्री बाशी की याद आ गई, जो अपनी कविता हाइकू शैली में करते थे। तीन पंक्तियों में अपनी बात कम शब्दों में रख देना इस शैली की खासियत है। श्री टंडन की कविता थोड़ी लम्बी है, लेकिन असर में भरपूर जैसे-

मेरी कविता ऐसी ! भिखारी की रोटी-सी, बुढ़िया की सोटी-सी, कैरम की लाल गोटी-सी, मेरी कविता ऐसी! ताले की चाबी-सी, भैया और भाभी-सी, लेखकों में नागर-सी, गागर में सागर-सी, ऐसी है मेरी कविता...!

उल्लेखनीय है कि अन्य कवियों की कविताएँ भी प्रभावित करती हैं। सबसे बड़ी जो बात इन कवियों को पढ़ते हुए दिखाई देती है, वह यह है कि ये सब कवि रेलवे जैसे महत्वपूर्ण विभाग में कार्य करते हुए भी रचनारत हैं। 'रेल दर्पण' के प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन और उनकी सम्पादकीय टीम ने अपने काम को बखूबी अंजाम दिया है। उनका परिश्रम पूरी पत्रिका में झलकता है। इस प्रकार 'रेल दर्पण' में पश्चिम रेलवे द्वारा जनता की सेवा में किये गये उत्कृष्ट कार्यों की उल्लेखनीय झलक देखने को मिलती है।

ब्रजेश कुमार, वरिष्ठ पत्रकार

नवभारत

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

रेल उपलब्धियों का संग्रहणीय दस्तावेज

पश्चिम रेलवे द्वारा प्रकाशित 'रेल दर्पण' न केवल अंक-दर-अंक निखरती जा रही है, बल्कि गृह पत्रिका की परिधि से निकलकर बहुआयामी स्वरूप धारण करती जा रही है।

रेलवे की इस पत्रिका में एक तरफ जहाँ रेलवे की उपलब्धियों को समरसता के साथ समाहित किया गया है, वहीं दूसरी तरफ रेल परिवार की रचनात्मक प्रतिभाओं को भी अपनी बात रखने का अवसर दिया गया है। इस लोकप्रिय पत्रिका के 'विशेष अतिथि रचनाकार' स्तम्भ में अब तक सर्वश्री गुलज़ार, जावेद अख्तर, कैफ़ी आज़मी, शैल चतुर्वेदी, निदा फाज़ली, हुल्लड़ मुरादाबादी, गोपालदास नीरज, माया गोविंद, आशकरण अटल, अशोक चक्रधर, सूर्यभान गुप्त, मधुप पांडेय, शैलेश लोढ़ा और देवमणि पांडेय जैसे दिग्गजों की रचनाओं को खास अंदाज में प्रस्तुत किया गया है।

प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन ने डबल डेकर ट्रेन के इतिहास पर बड़े ही रोचक ढंग से प्रकाश डाला है। श्रीमती अर्चना महतपुरकर ने 'गुड़ की रोटी' बनाने की विधि को वर्णित कर 'रेल दर्पण' में मिठास घोलने की अच्छी कोशिश की है।

कमल मिश्र, वरिष्ठ पत्रकार

जागरूक टाइम्स,

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

दिनों दिन निखरती पत्रिका 'रेल दर्पण'

'रेल दर्पण' का नवीन अंक नये कलेवर में सारे रंगीन पृष्ठों के साथ आकर्षक रूप में आया। यद्यपि पूर्व अंकों से ही पत्रिका की अंतर्वस्तु लोकप्रियता के लिए किसी बाह्य शृंगार की मोहताज नहीं रही है, फिर भी पत्रिका में संकलित चित्रों की महत्ता और प्रसिद्धि के मद्देनजर उनकी मोहकता में वृद्धि की पहल एक सकारात्मक प्रयास है।

डीसी-एसी परिवर्तन पर विशेष फोटो फीचर लाजबाब है। डीसी कर्षण के मुकाबले एसी कर्षण की खूबियों का सम्पूर्ण विवरण अलग-अलग हिस्सों में फोटो कैप्शन के माध्यम से देने का अंदाज बेहद लुभावना है। 'सामयिक गतिविधियाँ' स्तम्भ पश्चिम रेल पर एक अच्छी डॉक्यूमेंटरी का काम कर रहा है। सभी नियमित स्तम्भ पूर्व की भांति ही रोचकता से परिपूर्ण हैं। 'हमारे नये प्रशासकों का स्वागत' के अंतर्गत पश्चिम रेलवे से जुड़े प्रशासनिक अधिकारियों के विस्तृत परिचय की प्रस्तुति 'रेल दर्पण' के एक सम्पूर्ण गृह पत्रिका होने की धारणा को पुष्ट करती है।

'कथा-कुंज' में नवोदित लेखकों को जगह देकर उनके उत्साहवर्द्धन का सराहनीय प्रयास किया गया है। इस स्तम्भ में श्रीमती इन्दु सिन्हा की कहानी 'प्रतीक्षा' प्रेम की दूरी के अहसासों को व्यक्त करती है। वहीं श्री विनय पटेल की रचना 'मजबूरन' विकास के सरकारी आँकड़ों और देश की गरीबी की वास्तविकता के धरातल पर मूल्यांकन करती एक संदेशपरक रचना है। फिल्मों में नायिका भेद को परिभाषित करते श्री आश करण अटल के व्यंग्य बाण बिल्कुल निशाने पर लगते हैं, तो व्यंग्य वीथिका में डॉ. ताराचंद शर्मा द्वारा लिखा 'हिंदी दिवस 14 सितम्बर कितना सार्थक ?' गुदगुदाने वाला लेख है। 'सखियों का संसार' के अंतर्गत तीज महोत्सव सहित अन्य कार्यक्रमों का सचित्र वर्णन सम्पादक मंडल की संयोजन कुशलता का उदाहरण प्रस्तुत करता है, वहीं श्रीमती अर्चना महतपुरकर की 'गुड़ की रोटी' गृहणियों के लिए एक नया उपहार है।

काव्यात्मक अभिव्यक्ति में 'जंग जारी है...' काफी कुछ सोचने पर विवश करती है। वहीं वरिष्ठ जनसम्पर्क अधिकारी श्री गजानन महतपुरकर की रचना 'एक गजल नये दौर की !' सामाजिक परिवेश में विलुप्त होते लालित्य को अभिव्यक्त करती है। इसी खंड में भूषण हत्या पर करारी चोट करती सुश्री प्रतिभा डी. अग्निहोत्री की 'अन्तर्नाद' बड़ी ही मार्मिक और दिल को छू जाने वाली रचना है। अंग्रेजी खंड में

मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री शरत चंद्रायन का लेख 'MORE TRAIN PER TRAIN : THE STORY OF DOUBLE DECKER' रेलवे के सतत विकास के प्रयासों की एक यादगार झांकी प्रस्तुत करता है। 'स्पेशल इंटरव्यू' में गायक श्री कैलाश खेर से रेलवे सहित अन्य विषयों पर बातचीत पत्रिका को विशिष्ट आयाम प्रदान करती है। 'विशेष अतिथि रचनाकार' कॉलम में श्री देवमणि पांडेय की दो गजलें पत्रिका का विशेष आकर्षण हैं। 'रेल दर्पण' का यह अंक सभी अपेक्षित पक्षों को समाहित करने में सफल और सार्थक हुआ है।

अजीत राय, संस्करण सम्पादक, मुंबई

यशोभूमि,

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

सृजनात्मक उत्कृष्टता के नये सोपान छूती पश्चिम रेलवे की 'रेल दर्पण'

पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' को देश की सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का सर्वोच्च खिताब महामहिम राष्ट्रपति के हाथों प्राप्त हुआ है। यह पत्रिका सृजनात्मक उत्कृष्टता के नित नये सोपान तय करती है। 'रेल दर्पण' ने जहाँ एक तरफ एसोसिएशन ऑफ बिजनेस कम्युनिकेटर्स ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में लगातार 10 वें वर्ष अपनी रचनात्मक उत्कृष्टता के लिए दो राष्ट्रीय पुरस्कारों पर कब्जा जमा कर अपनी श्रेष्ठता का परचम फिर से लहराया है, वहीं दूसरी तरफ प्रमुख साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था 'आशीर्वाद' द्वारा देश की पाँच सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिकाओं में अपना नाम शामिल करके 'रेल दर्पण' ने अपना वर्चस्व सिद्ध किया है। इस पत्रिका ने अपनी विकास परम्परा को पाठकों तक पहुँचाने के साथ-साथ सृजनात्मक पक्ष को भी उच्च स्तरीय बनाये रखा है। पत्रिका के 'सामयिक गतिविधियाँ' स्तम्भ में पश्चिम रेलवे की विभिन्न गतिविधियों का विस्तृत लेखा-जोखा सम्बंधित छायाचित्रों के साथ निरूपित किया गया है। 'स्वास्थ्य चर्चा' में नौद व आलू के महत्व की जानकारी काबिले-तारीफ है। 'व्यंग्य वीथिका' में नायिका भेद, हिंदी दिवस कितना सार्थक ? व मेरा भारत महान हमें सोचने के लिए मजबूर कर देते हैं कि हम कौन थे ?, क्या हो गये ? और क्या होंगे अभी ? काव्यात्मक अभिव्यक्ति रेलकर्मियों के रचनात्मक पहलू को उजागर करती है। 'विशेष अतिथि रचनाकार' श्री देवमणि पांडेय की गजलें व मशहूर गायक श्री कैलाश खेर का साक्षात्कार भी काफी रोचक है। 'सखियों का संसार' पश्चिम रेलवे परिवार की महिलाओं के संगठित होने की बानगी पेश करता है। नये

अंक में रोचक, मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक सामग्री का समावेश इस पत्रिका को एक नया कलेवर देने तथा 'रेल दर्पण' को रेल की परिधि से बाहर निकालकर बहुआयामी व समाजोपयोगी बनाता है। पत्रिका के प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन व वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक श्री गजानन महतपुरकर और उनकी सम्पादकीय टीम हार्दिक अभिनंदन की हकदार है।

 योगेन्द्र सिंह, वरिष्ठ पत्रकार

हमारा महानगर,

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

नित नई ऊँचाइयाँ छू रही 'रेल दर्पण'

पश्चिम रेलवे की पत्रिका 'रेल दर्पण' का नवीनतम अंक आवरण पृष्ठ पर 'दुगुनी क्षमता ने पाई रफ्तार, सुविधा को मिला नया अवतार' के घोष वाक्य के जरिये डबल डेकर एसी ट्रेन के शुभारम्भ की मुनादी कर रहा है। निस्संदेह ज्यादा यात्रियों की क्षमता वाली यह ट्रेन भीड़-भाड़ के वक्रत यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए एक शानदार सौगात है। 'रेल दर्पण' यद्यपि पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका है, फिर भी इसने हमेशा उस परिधि से बाहर जाने की और यात्रियों से सम्बंध साधने के अलावा जन उपयोगी प्रदर्शनी की झलक, अतिथि रचनाकारों की कविताएँ, रेलवे के इतिहास से सम्बंधित जानकारीयाँ आदि देकर इसे हर तरह से पठनीय, संग्रहणीय और व्यापक तौर पर उपयोगी बनाने का प्रयास किया है।

यह पत्रिका कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा उभारने और विविध क्षेत्रों में हो रही गतिविधियों से सम्बंधित समाचार आदि प्रकाशित कर हर तरह से लोगों को जानकारी देने का सराहनीय प्रयास कर रही है। यह अनायास नहीं है कि पत्रिका वर्षानुवर्ष विभिन्न उत्कृष्ट पुरस्कारों से नवाजी जा रही है और साहित्य जगत एवं समीक्षकों द्वारा हाथों-हाथ ली जा रही है। यह पत्रिका पश्चिम रेलवे के साथ-साथ हमारे समाज की विभिन्न झाँकियों का आईना भी है। 'रेल दर्पण' इसी तरह नित-नई ऊँचाइयाँ छूती रहे, हमारी यही शुभकामनाएँ।

 सुश्री गीता पाल, वरिष्ठ पत्रकार

गुजरात वैभव,

अहमदाबाद में प्रकाशित समीक्षा

हिंदी की विशिष्ट पत्रिका है 'रेल दर्पण'

पश्चिम रेलवे की 'रेल दर्पण' पत्रिका का नवीनतम अंक अतिविशिष्ट सामग्री से सुसज्जित, मनोहारी एवं चित्ताकर्षक है। अपने पूर्व के अंकों की परम्परा के अनुसार यह अंक भी पठनीय एवं संग्रहणीय है। यह अत्यधिक संतोष का विषय है कि

पश्चिम रेलवे अपने कार्यकलापों में हिंदी के प्रयोग को बखूबी बढ़ावा दे रही है तथा 'रेल दर्पण' जैसी एक विशिष्ट हिंदी पत्रिका का प्रकाशन कर हिंदी के खजाने को समृद्ध कर रही है। इस अंक में भी अत्यधिक सुंदर, आकर्षक चित्रों को चिकने कागज पर प्रकाशित कर इसे मनोरम्य बना दिया गया है। पश्चिम रेलवे से सम्बंधित विभिन्न गतिविधियों का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है, जिससे पाठकों को रेल सम्बंधी जानकारी घर बैठे प्राप्त हो जाती है। इस पत्रिका का सबसे आकर्षक पहलू इसकी शुद्ध और परिमार्जित हिंदी भाषा तथा सुंदर चिकने कागज पर आकर्षक मुद्रण है। जगह-जगह दैनिक जीवन में उपयोगी लेखों को भी स्थान दिया गया है, जैसे बड़े काम का आलू, नींद आदि। लघुकथाओं का प्रकाशन भी पत्रिका की पठनीय सामग्री को और अधिक समृद्ध बनाता है। 'कथा-कुंज' में कई हृदयस्पर्शी लघु कथाओं को स्थान दिया गया है। अन्य विविध स्तम्भ भी आकर्षक हैं, जिनमें उपयोगी जानकारी दी गई है। 'काव्यात्मक अभिव्यक्ति' में अच्छी कविताओं को स्थान देकर इस पत्रिका को हिंदी की विशिष्ट पत्रिकाओं में शामिल करने योग्य बना दिया गया है। एक आकर्षक, रोचक एवं मनोहारी पत्रिका का प्रकाशन करने के लिए सम्पादक मंडल निश्चय ही साधुवाद का पात्र है।

नवाकाळ

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

विविधते ने नटलेले 'रेल दर्पण'

'रेल दर्पण' ही पश्चिम रेलवे की उत्कृष्ट गृह पत्रिका आहे. महाराष्ट्र सरकारचे 'लोकराज्य' ज्याप्रमाणे अधिकाधिक लोकप्रिय होत आहे, त्याचप्रमाणे 'रेल दर्पण' ही लोकप्रिय होत आहे. कारण त्यात आकर्षक विविधता आहे.

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी व प्रधान संपादक श्री शरत चंद्रायन यांनी 'रेल दर्पण' म्हणजे रेल्वेच्या अधिकाऱ्यांचा फोटो आल्बम केला नाही. त्यात विविधता आहे. एका लेखात घरी-दारी लोकप्रिय असलेल्या बटाट्याचे पोषक मूल्य श्री प्रभुदयाल यांनी सांगितले आहे.

माणसाला शांत निद्रा आरोग्यासाठी व आनंदासाठी फार महत्वाची असते. त्याबाबत राजस्थानचे श्री अभयकुमार जैन यांचा उत्तम लेख आहे, पण लक्षात ठेवले, पाहिजे की, हा लेख रात्रीच्या निद्रेबाबत आहे. ऑफिसात दिवसा झोपण्यासाठी नाही ! विविध सुंदर लघुकथा आहेत. कमाल म्हणजे 'सूडोकू' सुद्धा आहे. मुंबईचे लोको पायलट श्री रजनीश प्रजापती यांचा 'फादर्स डे' हा लेख डोळ्यांत अंजन टाकणारा आहे.

पत्रिकेचे कुशल संपादक श्री चंद्रायन यांना एक महत्वाची सूचना आहे. हिंदी भाषेचा प्रसार करण्यासाठी

मुंबई रेल्वे विकास कॉर्पोरेशन चे कार्यालय अधीक्षक श्री गिरीश कुमार यादव यांचा लेख आहे. 'रेल दर्पण' मधे इंग्रजीही आहे. मग मराठी भाषेत काहीच मजकूर कसा नाही ? संपादक श्री चंद्रायन व्यापक विचारांचे आहेत. ते दूरदृष्टीचे आहेत. यामुळेच ते सर्वांना बरोबर घेऊनच वाटचाल करतात. मराठीलाही स्थान दिले तर 'रेल दर्पण' ची लोकप्रियता अजून वाढत जाईल आणि 'रेल दर्पण' मराठी भाषिकांतही 'लोकराज्य' प्रमाणे खपाचे विक्रम करील.

 नीलकंठ खाडीलकर, प्रधान सम्पादक

बहुजनरत्न लोकनायक

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

पश्चिम रेल्वेच्या 'रेल दर्पण' चे प्रकाशन

पश्चिम रेल्वेच्या जनसंपर्क विभागाकडून गेल्या तेरा वर्षांपासून प्रकाशित होत असलेल्या अर्ध वार्षिक 'रेल दर्पण' या गृहपत्रिकेचे नुकतेच प्रकाशन करण्यात आले.

ही गृह पत्रिका केवळ रेल्वेपुरती मर्यादित न ठेवता त्याच्या स्वरूपातही बदल करण्यात येऊन प्रत्येक अंक विविधांगी बनविण्याचा सातत्याने प्रयत्न करण्यात आला आहे. या गृहपत्रिकेत घडामोडी व उपलब्धी याबाबतचा लेखाजोखा छायाचित्रांसह दिला जातो.

'विशेष अतिथी रचनाकार' स्तंभाच्या अंतर्गत अजून पर्यंत आंतरराष्ट्रीय कीर्तीचे गीतकार सर्वश्री गुलज़ार, जावेद अख्तर, कैफ़ी आझमी, शैल चतुर्वेदी, निदा फाजली, हुल्लड मुरादाबादी, गोपालदास नीरज सारख्या व अन्य दिग्गजांच्या कवितांचा समावेश या पत्रिकेत करण्यात आला आहे।

रेलवे की सर्वाधिक चर्चित पत्रिका है 'रेल दर्पण'

कुछ दिनों पहले जबलपुर के राजभाषा अधिकारी से 'रेल दर्पण' का एक पुराना अंक देखने को मिला। अंक देख कर मन प्रसन्न हो गया। कवि श्री सूर्य भानु गुप्त की गज़लें हमेशा की तरह ही हृदयस्पर्शी थीं। श्री राजू श्रीवास्तव से साक्षात्कार के प्रश्नों ने भारतीय रेल के प्रति उनके लगाव और प्रशंसापूर्ण अभिव्यक्तियों को रेखांकित किया।

मुखे सबसे अधिक आकर्षित किया पाठक-पाठिका में 'रेल दर्पण' के विशेषांक पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं की सराहनापूर्ण प्रतिक्रियाओं ने और इसीलिए 'रेल दर्पण' भारतीय रेल पर प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में निस्संदेह रूप से सर्वाधिक चर्चित पत्रिका है।

 नवीन चतुर्वेदी

सेवा निवृत्त रेलवे स्कूल प्राचार्य, साउथ सिविल लाइन्स, जबलपुर